ISSN 2581-9917

सीधी-राह

पूनम तंवर*

''आओ हम भी वतन को परखें जहाँ बनाएँ।
हिन्दोस्ताँ को काबिल हिन्दोस्ताँ बनाएँ।''

भूमिका

सांस्कृतिक विभिन्नताओं भरे इस देश में सम्पूर्ण मानव के विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। जब एक शिशु परिवार में जन्म लेता है, तो उस परिवार के लोग उसके जन्म से ही सपने बुनना प्रारम्भ कर देते हैं। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन पर अपने हृदयोद्गार प्रस्तुत करते हुए वर्तमान की एक भयावह समस्या पर दो शब्द निवेदित करना चाहती हूँ। वह विकटतम समस्या है 'सीधी राह' जिसके लिए हम सब जिम्मेदार हैं, न कि कोई व्यक्ति विशेष।

शाब्दिक अर्थ

'सीधी राह' का शाब्दिक अर्थ है सीधा रास्ता अर्थात् जो यात्री को उसके गन्तव्य स्थान तक सुगमतापूर्वक पहुँचाने में सक्षम हो। ये दो शब्द सुनने व देखने में जितने साधारण लगते हैं वास्तविकता में वे उतने ही टेढ़े हैं। क्योंकि सीधी राह तय करना तो सभी चाहते हैं पर अमल कोई-कोई करता है। कुछ परिस्थितियां ऐसी हो रही हैं कि मानव चाहकर भी सीधी राह पर चल नहीं पा रहा है। मेरी नजर में इसके अनेक कारण हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में वह स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने के लिए स्वार्थी हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है और अपने आप को सही साबित करने के लिए वह किसी का कत्ल करने में भी हिचकिचाहट नहीं करता, बेझिझक कर डालता है।

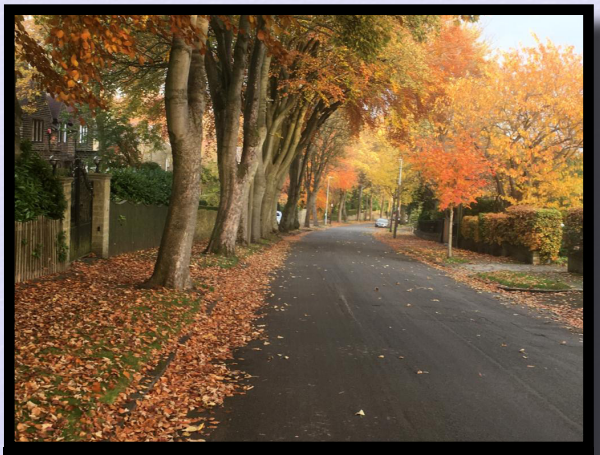

चित्र : रीता नेगी

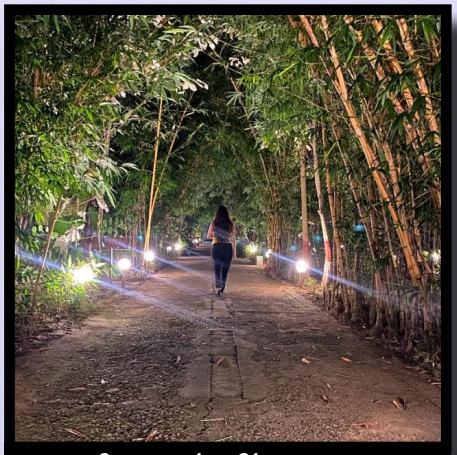

चित्र : आकांक्षा सिंह कुशवाहा

* प्राचार्या,
द हौराइजन इंटरनेशनल स्कूल, पानीपत, हरियाणा।

समय की मांग

एक ओर जहाँ धर्म, सम्प्रदाय, भाषावाद, उग्रवाद, क्षेत्रवाद भ्रष्टाचार व आरक्षण जैसी समस्याएँ छाती ताने खड़ी हैं वहीं एक अति भयावह समस्या है : सीधी-राह होते हुए भी उसे टेढ़ी बनाना। स्मार्ट बनने के चक्कर में और समय की कमी होने के कारण आज हम भटक रहे हैं। सभी को जल्दी अपना काम करवाना है चाहे उसके लिए हमें कुछ भी करना पड़े, कोई भी गलत रास्ता अपनाना पड़े। फिर चाहे हमें कितने ही मासूम दिलों को रौंदकर अपना रास्ता तय करना पड़े, हम परवाह नहीं करते, हम सिर्फ अपना काम करवाना चाहते हैं। चाहे उसके लिए हमें किसी की जान ही क्यों न लेनी हो, हम पीछे नहीं हटते। समय की रफ्तार इतनी अधिक है कि प्रत्येक मनुष्य इसके पीछे तीव्र गति से दौड़ रहा है।

प्रिय पाठकों यह समस्या सम्पूर्ण मानवजाति की है। हम इसे अनदेखा कर देते हैं क्योंकि हम स्वार्थी हो गए हैं, हमें किसी के सुख-दुःख से कोई फर्क नहीं पड़ता है। आज मानव का रक्त लाल की बजाए सफेद हो चुका है।

हमेशा याद रखें बड़े से बड़े महान कार्य एक छोटे से संघर्ष में छिपे रहते हैं। दुर्भाग्य, अकेलापन और निर्धनता ही ऐसे संघर्ष स्थल है जहाँ बहादुर लोग आसमान छूने की कीमत देते हैं।

इरादा पक्का हो और लगन सच्ची हो तो
पहाड़ को भी रास्ते से हटाया जा सकता है।

बीता समय कभी लौट कर नहीं आता। यह उतना ही सत्य है जितना कि जीवन और मृत्यु। समय जहाँ किसी को कामयाबी की दास्तान लिखने की चाबी दे जाता है तो किसी को असफलता के भंवर में छोड़ जाता है। कामयाब न होने की असफलता, उस व्यक्ति के मन मस्तिष्क में घुन की तरह लग जाती है।

लगन जो स्वयं हित जागी वो हरगिज मिट नहीं सकती।
जिस्म के खाक होने से भी शोहरत खो नहीं सकती।।
भले दौलत की ताकत से खरीदो सारी दुनिया तुम।
मेहनत की मगर कोई भी कीमत हो नहीं सकती।।

भ्रष्ट प्रशासन

मानव की सीधी राह से भटकने का मुख्य कारण मैं भ्रष्ट प्रशासन को मानती हूँ। लोग सामाजिक कम स्वार्थी अधिक हो गए हैं। लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा शासन होता है, लेकिन वर्तमान समय में इसका विपरीत हो गया है। अब लोकतंत्र भ्रष्ट राजनेताओं का भ्रष्ट शासन हो गया है। यह लोकतंत्र का ही खेल है कि गरीब-गरीब होता जा रहा है अमीर अधिक अमीर। मेरा कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि सीधी राह पर चलना मनुष्य के लिए कितना नामुमकिन हो रहा है, ईमानदारी भूखी मर रही है। सीधी राह को अपनाने वाला व्यक्ति दो वक्त की रोटी नहीं जुटा पा रहा है, परिस्थितियाँ व्यक्ति को मजबूर कर रही हैं।

कफन चोर देखो कफन बेचते हैं,
अमन चोर देखो अमन बेचते हैं,
जिनको पहरेदार बनाया था वतन का,
वे देश में बैठे वतन बेचते हैं।

सीधी राह पर चलने वाला व्यक्ति पिछड़ रहा है, देश और समाज ने उसे बहुत पीछे धकेल दिया है।

डिजिटल इंडिया आज स्मार्ट तो हो गया परन्तु सिर्फ बाहर से, भीतर से तो पहले से भी अधिक श्यामवर्ण हो गया है। आज जल्दी के चक्कर में हम स्मार्ट अधिक और ज्ञानी कम होते जा रहे हैं।

तकनीकि शिक्षा का बोलबाला

तकनीकि क्षेत्र में तो हम उन्नति कर रहे हैं पर शिक्षा से विमुख होते जा रहे हैं। शिक्षा पर तो आज का विद्यार्थी ध्यान ही नहीं दे रहा। आज-कल विद्यार्थी उसी स्कूल व कॉलेज में दाखिला लेना चाहते हैं जो सबसे महंगा हो क्योंकि आज का विद्यार्थी अधिक एडवांस्ड हो गया है।

विद्यालय व महाविद्यालयों की स्थिति

विद्यालय विद्या का मंदिर होते थे; जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार था, परन्तु अब शिक्षा सिर्फ कमाई का साधन बनकर रह गई है। भ्रष्ट प्रशासन की वजह से बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ रहे हैं। विद्यालय में बाहरी आवरण पर अधिक जोर दिया जा रहा है। शिक्षा सिर्फ व्यापार का जरिया बनकर रह गई है। भावी भारत का भविष्य खतरे में है। यही स्थिति बच्चों को उनकी राह से भटका रही है। यही कारण है कि मनुष्य भटकाव के इस भंवर में उलझ कर रह गया है।

योग्यता से अधिक जाति, धर्म व श्रेणी का महत्व

वास्तव में मानव जाति का 'सीधी राह' से भटकाव का मुख्य कारण, प्रशासन द्वारा योग्यता को कम तथा जाति, धर्म व श्रेणी को अधिक महत्व देना है। निम्न श्रेणी का विद्यार्थी निम्न अंक प्राप्त करके, अयोग्य होते हुए भी श्रेष्ठ पद को सुशोभित करता है जबकि उच्च श्रेणी का विद्यार्थी श्रेष्ठ अंक प्राप्त करके भी तथा योग्य होते हुए भी दर-दर भटकने को मजबूर है। ये भेदभाव मानवता का हनन नहीं तो क्या है? मेरे अनुसार तो योग्यता किसी जाति, वर्ग की मोहताज नहीं। ये केवल मेहनत से ही अर्जित की जा सकती है न कि दौलत से खरीदी जा सकती है। जैसे कि ऊँचे कुल में जन्म लेने से कोई श्रेष्ठ नहीं बनता उसके लिए श्रेष्ठ कार्य करने पड़ते हैं। मनुष्य के द्वारा किए गए श्रेष्ठ कर्म ही श्रेष्ठ कुल का निर्माण करते हैं। इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम योग्यता की महत्ता को पहचाने और उसी के आधार पर निर्णय ले। तभी हम सच्चे एवं अच्छे मनुष्य बन सकेंगे।

बच्चों की मानसिक स्थिति पर गहरा असर

इस जाति, वर्ग श्रेणी के आधार पर होने वाले भेदभाव की वजह से बच्चे अर्थात् आज का युवा वर्ग मानसिक रूप से बीमार हो गया है। ये भेदभाव कोविड-19 जैसी महामारी से भी अधिक भयानक है। इससे युवा वर्ग पिछड़ रहा है। अपने रास्ते से भटक रहा है। इसके लिए हम सभी जिम्मेदार हैं, क्योंकि हम स्वयं बदलना नहीं चाहते सिर्फ जमाने को बदलना चाहते हैं। जैसा की आप सभी जानते हैं कि आशावादी लोग निराशावादी लोगों की तुलना में अधिक दीर्घकालीन होते हैं।

गिरकर उठना, उठकर चलना यह क्रम है संसार का।
कर्मवीर को फर्क न पड़ता, क्षणिक जीत या हार का।।

हम सभी बाह्य व्यक्तित्व की ओर भाग रहे हैं इसका मुख्य कारण संस्कार विहिनता है। आज चहुँओर मुखौटानुमा संस्कृति दिखाई दे रही है। समाज व देश के उत्थान के लिए युवा वर्ग को इस भटकाव से दूर ले जाकर उनका मार्ग प्रशस्त करना होगा। उन्हें सही-गलत की दृष्टि से रूबरू कराना चाहिए। प्राणीमात्र के हृदय में सहानुभूति, सहिष्णुता, परोपकार के बीज बोने होंगे। इस कठिन कार्य के लिए हमें अनवरत प्रयास करना होगा।

माता-पिता का दबाव

माता-पिता 'ईश्वर तुल्य' होते हैं। उनके सपनों को पूरा करना प्रत्येक बच्चे का कर्त्तव्य होता है, परन्तु वर्तमान समय में ये कर्त्तव्य दबाव का रूप ले रहा है। माता-पिता बच्चों को मजबूर कर रहे हैं कि वे उनके सपनों को साकार करें। बच्चों के लिए आदर्श बनिए। अपने सपनों को उनपर मत थोपिए। उनका मार्गदर्शन कीजिए। कभी भी उनके ऊपर माता-पिता होने का अहसान मत जताइए। माता-पिता अपने बच्चों को संस्कारयुक्त बनाए न कि उनकी तुलना कर उन्हें भटकने के लिए मजबूर करें। आए दिन हम खबरों में देखते व सुनते हैं कि बच्चे मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। वे माता-पिता के दबाव में आकर आत्महत्या कर रहे हैं-

कथानक व्याकरण समझे तो सुरभित छंद हो जाएँ।
हमारे देश में फिर से सुखद मकरंद हो जाएँ।।
मेरे ईश्वर, मेरे दाता मैं ये ही माँगती तुझसे।
युवा पीढ़ी संभलकर के विवेकानन्द हो जाएँ।।

बच्चों के इस भटकाव का मुख्य कारण माता-पिता का दबाव है। अकसर हम अपने जीवन की तुलना दूसरों से करते हैं और दुखी रहते हैं। हमसब ये जानते हुए भी अनजान बनते हैं कि एक जैसा भाग्य ईश्वर ने किसी का नहीं बनाया है। अपने कर्मों के द्वारा ही हम तुच्छ व श्रेष्ठ बनते हैं। वास्तव में सही मानव वही है जो बिना किसी को नुकसान पहुचाएँ अपने पथ पर अग्रसर होता रहे।

यही पशु प्रवृति है कि आप-आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि मनुष्य के लिए जिए मनुष्य के लिए मरे।।

समानता के अधिकार की अवहेलना

भारतीय होने के नाते हम सभी को संविधान द्वारा कुछ मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं। उन्हीं में से एक अधिकार है समानता का अधिकार जो हमें मिला है पर लागू नहीं हो रहा। आजकल पूरे देश में आरक्षण का ही बोलबाला है। सिर्फ जातिवाद का ही जोर है, समस्त जनता एक-दूसरे की टांग खीचने में लगी है, कोई कुर्सी पाने के चक्कर में, तो कोई स्वयं को श्रेष्ठ बनाने के चक्कर में लगा है। ईमानदार व्यक्ति अपनी पूरी उम्र दो वक्त की रोटी कमाने में ही लगा देता है। कानून बनाने वाले ही कानून को पैसे से खरीद रहे हैं। अमीरों के लिए तो कोई कानून बना ही नहीं है। कानून के ठेकेदार रिश्वत लेकर कानून को तोड़ रहे हैं। निम्न श्रेणी व उच्चे श्रेणी में पैदा होने के कारण इंसानियत तो जैसे खत्म हो गई है। उच्च श्रेणी का विद्यार्थी 99.9 प्रतिशत अंक लेकर भी पीछे धकेल दिया जाता है और इतना पीछे कि उसे संभलने में पूरी उम्र बीत जाती है। इसका मुख्य कारण भ्रष्ट प्रशासन है।

सफलता एक भ्रम है

सफलता का दायरा निश्चित नहीं होता है। हर कोई सफल होना चाहता है। सफलता क्या है? क्या स्वयं की योग्यता के प्रति अज्ञानता, आप अपनी सीमा से बाहर जाते हैं तो आप इसे सफलता मान लेते हैं। गर्वित हो जाते हैं। लेकिन अपने ही दायरे में रहकर आप स्वयं को असफल महसूस करते हैं, ग्लानि व तनाव में आ जाते हैं। वास्तव में सफलता और असफलता दोनों में ही एक समान रहना सच्ची सफलता है। धर्म मानवीय गुणों का नाम है जिन्हें धारण करके मनुष्य उन्नति कर सकता है। अनादर व असफलता की चिंता मत करो, इन्हें स्वीकार करो, याद रखो, ये वो चुनौतियाँ हैं, जो तुम्हें कुंदन बनाती है।

ईश्वर की सत्ता पर विश्वास रखो अपने पथ पर चलते रहो,एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब लोग तुम्हारी सत्ता को नमन करेंगे। आशावादी बनो, निराशा को त्याग दो, ये संकल्प करो कि तुम स्वयं अपने भाग्य निर्माता हो, कर्मवीर बनो।

काम करो ऐसा कि पहचान बन जाए,
हर कदम चलो ऐसा कि निशान बन जाए,
यह जिन्दगी तो सब काट लेते हैं,
जिन्दगी ऐसे जीयो कि मिसाल बन जाए।

समाज व प्रशासन से अनुरोध

प्रिय पाठकों इस लेख को लिखने का मेरा उद्देश्य सिर्फ इतना सा है कि हमें सदा सच्चाई के पथ पर चलना चाहिए। चाहे वह पथ कितना ही काँटो भरा क्यों न हो। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता के आधार पर लक्ष्य प्राप्ति हो न कि किसी जाति, श्रेणी व वर्ग के आधार पर। ये लड़ाई हम सब की है। अधिकारों के साथ-साथ हमें कर्त्तव्यों को भी ध्यान में रखना चाहिए। अपने लक्ष्य को पाने से पहले हमें ये विचार अवश्य करना चाहिए कि हमारी वजह से किसी को हानि न पहुँचे। ये देश हमारा है यदि समानता का दायरा बढ़ा दिया जाए और सिर्फ योग्यता के आधार पर आंकलन किया जाए तभी हम भावी नागरिक, भावी नेता तथा समाज सुधारक बन सकेंगे। बुद्धि आंकलन परीक्षाओं का आयोजन तो योग्यता के आधार पर किया जाता है पर परिणाम श्रेणी वर्ग के आधार पर जाति, धर्म के आधार पर किया जाता है जो नहीं होना चाहिए। आरक्षण, घृणा, द्वेष जैसी महामारी तो कोविड-19 से भी भयानक है जो हमें सदियों से घेरे हुए हैं। हम चाहकर भी इनसे निकलना नहीं चाहते। हमारी सोच कुएँ के मेंढक की तरह हो गई है, जो हमें स्वार्थी बनने के लिए उत्तेजित करती है। हम चाह कर भी कुछ कर पाने में स्वयं को असहाय पाते हैं। क्योंकि आवश्यकता एकजुट होकर अपनी सोच व नजरिया बदलने की है। सरकार से अनुरोध है कि चाहे जो भी कानून बनाए वो सभी पर लागू हो न कि कुछ लोगों पर। यही हमारा अपने देश के प्रति समर्पण होगा। आरक्षण को नजरअंदाज कर सभी को समान अवसर प्रदान करने में हमें सहयोग करना होगा।

लोग कहते है बदलता है जमाना अक्सर,
मगर इंसान वो है, जो जमाने को बदल दे।

मानव जीवनएक यात्रा के समान है, जो जीवनपर्यन्त गतिमान रहता है। पर यात्री को अपने गन्तव्य का सम्पूर्ण ज्ञान ही नहीं होगा तो उसकी यात्रा निरर्थक हो जाएगी। आवश्यकता यह है कि हम सब यह प्रण ले कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सही राह चुनेंगे। आओ हम इस तनावयुक्त जीवन को खुशहाल बनाने का प्रयास करें। अपने आसपास होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएँ, अपनी जननी जन्मभूमि का कर्ज अदा करें।

अंत में मैं सभी पाठक वृन्द से करबद्ध निवेदन करती हूँ कि जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु सही मार्ग चुनें। सीधा रास्ता आपको आपके गन्तव्य स्थान तक अवश्य पहुँचाएगा। ईश्वर की सत्ता व अपनी कर्त्तव्य भावना तथा कर्म पर विश्वास बनाए रखें। अपनी राह पर निरन्तर गतिमान रहे। कोशिश करिए फिर देखिएगा कि आपके पीछे पूरा कारवाँ होगा और आप सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आदर्श स्थापित करेंगे। आवश्यकता है कदम उठाने की, दृढ़ निश्चय की, आत्मविश्वास की। क्या आप जानते हैं कि समय के सामने के बाल होते हैं, पीछे से वह गंजा होता है, इसका अर्थ यह है कि समय के महत्व को समझो। सफलता की उँचाई को छूने के लिए सीढ़ी का प्रयोग अर्थात् अपनी सोच को सही रखें तभी हमसब सीधी राह पर सुरक्षित चल पाएंगे।

आओ करे प्रतिज्ञा हम सब गौरवशाली भाषा में,
क्यों जिंदा सिर्फ तिजौरी भरने की अभिलाषा में,
क्यों अपने मन में औरों की खातिर पीर नहीं होती,
एक सरीखी दुनिया में सबके तकदीर नहीं होती।

****